आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 2/जून 2024
Received: 20/06/2024; Published: 26/06/2024

कविता

नयी पीढ़ी???

- प्रतिभा मुदलियार

हाथ उठाया था उसने
मुझपर
बाल भी खींचे
मरोड़ी थी कलाई भी।
यह कहते वक्त
उसकी आँखें
शून्य थी
चेहरा एकदम सपाट।
और मैं हिल गयी थी
अंदर तक।
आज भी?
नहीं यह
किसी
पुरूष की करतूत नहीं थी।
इक्कीस साल की लडकी का
अपनी बुवा के साथ
किया गया व्यवहार!
कहीं
बेटियों को मिली
आज़ादी
का परिणाम तो नहीं ?
हाथ उठने तक
तुम कैसे रह गयी थी चुप?
मेरी पहली प्रतिक्रिया!
जाने क्या सोच रही थी मैं

यह आज की युवा पीढ़ी?
नहीं
एक की करतूत
पूरी पीढ़ी को
कटघरे में नहीं ला सकती।
ना ही उसे हर बार दोषी
करार दिया जा सकता है।
भले ही यह घटना
नहीं है नयी
पर
एक पढ़ी लिखी लड़की का
एक पढ़ी लिखी स्त्री पर
हाथ उठाना
नही कर रहा मुझे सहज।
कारणों की तह तक
जाने की कोशिश में
कुछ भी नहीं लगता है
हाथ
सिवा
जायदाद
हक और
अधिकार के।
पाँच हजार साल पहले घटित
युद्ध के कारण
आज भी वैसे के वैसे!
अब युद्ध
दो परिवारों में नहीं
व्यक्ति व्यक्ति के मध्य है
वहाँ लिंग भेद नहीं है
ना ही है
इन्सानियत।

****